सत्र 2025–26

Vid Diploma in Performing Art-I Year (V.D.P.A.) Private

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory		
	Paper- I	100	33
	Paper-II	100	33
02.	Practical – I Demonstration & Viva	100	33
	Grand Total	300	

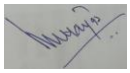

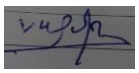
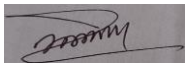
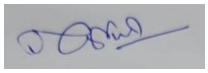

सत्र 2025–26
स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
विद् डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट
प्रथम वर्ष
तबला–शास्त्र
प्रथम प्रश्न पत्र

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

समय : 3 घंटे

इकाई 1

भारतीय वाद्यों के वर्गीकरण की संक्षिप्त जानकारी। तबले की उत्पत्ति एवं विकास का संक्षिप्त परिचय।

इकाई 2

तबले के दिल्ली एवं अजराड़ा घरानों की जानकारी एवं इन घरानों के वादन की शैलीगत विशेषताएं।

इकाई 3

प्रथमा एवं मध्यमा के पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति। पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर तालिपि पद्धति की परिचयात्मक जानकारी तथा पं. भातखण्डे एवं पं. पलुस्कर तालिपि पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।

ताल के दस प्राणों का विस्तृत अध्ययन।

इकाई 4

तबला वादकों की जीवनी एवं उनके वादन की विशेषताएं :–

पंडित रामसहाय, पं. कण्ठे महाराज, पं. कुदऊ सिंह, पं. रामशंकर पागलदास, पं. शारदा सहाय, उस्ताद नत्थू खां, उस्ताद मुनीर खां, उस्ताद अहमदजान थिरकवा, उस्ताद हबीबुद्दीन खां।

इकाई 5

निम्नलिखित वाद्यों का सचित्र परिचय :–

बांसुरी, शहनाई, हार्मोनियम, तानपुरा, पखावज, ढोलक, घुंघरू, बेला (वायलिन) सितार।

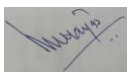 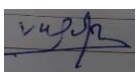 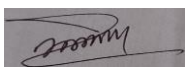 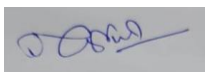

सत्र 2025–26
स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
विद् डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट
प्रथम वर्ष
तबला–शास्त्र
द्वितीय प्रश्न पत्र

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

निम्नलिखित तालों को ठाह, दुगुन, तिगुन चौगुन में लिखना –त्रिताल, तिलवाडा, आडाचौताल, कहरवा, दादरा, झूमरा, धमार।

समान मात्रा के तालों का तुलनात्मक अध्ययन।
एकताल–चारताल, झपताल–सूलताल, रूपक–तीव्रा, झूमरा–धमार ।

इकाई 2

लय एवं लयकारी को परिभाषित करते हुए कुआड़ (सवाई) आड़ (डेढ़ गुन) एवं बिआड (पौने दो गुन) लयकारी को लिखना। दिये गये बोल समूहों के आधार पर विभिन्न तालों में सम से सम तक की तिहाईयॉ बनाकर लिपिबद्ध करना।

इकाई 3

त्रिताल तथा रूपक में पेशकार, कायदा, तिहाई, चक्करदार, टुकड़े, परन आदि तालिपि में लिखना ।

इकाई 4

शास्त्रीय गायन, वादन एवं नृत्य में तबला संगति की सामान्य जानकारी। गज़ल, भजन चैती, कजरी, दादरा इन गीत प्रकारों की जानकारी एवं इनके साथ तबला संगति की जानकारी ।

इकाई 5

निम्नलिखित की उदाहरण सहित परिभाषाएं :– ताल, ठेका, कायदा, पेशकार, मुखड़ा, टुकडा, दमदार तिहाई, बेदमदार तिहाई, सरल परन, चक्रदार परन, फरमाईशी चक्करदार परन।

सत्र 2025–26
स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
विद् डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट
प्रथम वर्ष
क्रियात्मक

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

1. त्रिताल, झपताल के अतिरिक्त रूपक में संपूर्ण वादन।
2. त्रिताल में दिल्ली एवं अजराड़ा घराने की विशेषताओं से युक्त बंदिशों को बजाने का अभ्यास।
3. ''धिरधिर किटतक'' एवं ''तिरकिट'' के रेले विस्तार सहित तैयारी में बजाना।
4. त्रिताल में विभिन्न मात्राओं से तिहाईयां बजाने का अभ्यास ।
5. पाठ्यक्रम के तालों को हाथ से ताली देकर ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन में पढ़ना तथा तबले पर बजाना।
6. दादरा, कहरवा में लग्गियॉ तथा तिहाई बजाना।
7. गायन, वादन के साथ तबला संगति की जानकारी।

:संदर्भ सूची:

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
4. ताल परिचय भाग 1 एवं 2 – डॉ. एम. बी. मराठे

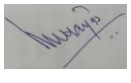

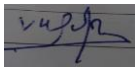
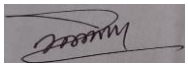

सत्र 2026–27

Vid Diploma in Performing Art
II Year (V.D.P.A.)
Private

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory		
	Paper- I	100	33
	Paper-II	100	33
02.	Practical – I Demonstration & Viva	100	33
	Grand Total	300	

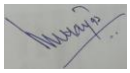

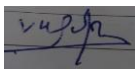
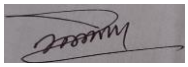
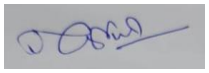

सत्र 2026–27

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु

विद् डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट अंतिम वर्ष

प्रथम प्रश्न पत्र–तबला

समयः 3 घंटे

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

कर्नाटक ताल पद्वति एवं ताल–लिपि की जानकारी। ताल के 10 प्राणों का विस्तृत अध्ययन।

इकाई 2

घन एवं तत् वाद्यों का सचित्र वर्णन :–

(अ) घंटा, कांस्यताल, जयघंटा, मंजीरा, झांझ।

(ब) सरोद, सारंगी, संतूर, विचित्र वीणा, सितार।

इकाई 3

बारहवीं शताब्दी तक के भारतीय संगीत के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी। तबला स्वतंत्र वादन का संक्षिप्त इतिहास तथा विभिन्न घरानों मे तबला एकल वादन के क्रम का अध्ययन।

इकाई 4

लखनऊ, बनारस, फर्रूक्खाबद तथा पंजाब घरानों का इतिहास एवं शैलीगत विशेषतायें।

इकाई 5

निम्न वाद्यों का सचित्र वर्णनः–

(अ) मृदंगम, पखावज, तबला, खोल, खंजरी, नाल।

(ब) निम्नलिखित तबला वादकों की जीवनी एवं वादन विशेषताएँ :–

उस्ताद अबिद हुसैन खॉ, पं. सामता प्रसाद (गुदई महाराज), पं. अनोखेलाल, पं किशन महाराज, उस्ताद करामतउल्ला खॉ, उस्ताद अल्लारक्खा खॉ, नाना पानसे, राजा छत्रपति सिंह, पं. अयोध्या प्रसाद।

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
विद् डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट अंतिम वर्ष
द्वितीय प्रश्न पत्र–क्रियात्मक सिद्धांत

समय : 3 घंटे

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, मसीतखानी एवं रजाखानी गीत एवं गत प्रकारों की जानकारी। आमद, उठान, कवित्त्, तत्कार तोड़े आदि की उदाहरण सहित व्याख्या।

इकाई 2

कायदा, एवं रेले के रचना सिद्वांत तथा प्रस्तार नियम। त्रिताल, झपताल तथा रूपक ताल में विभिन्न कायदे एवं रेले (विस्तार सहित) लिपिबद्ध करने ज्ञान।

इकाई 3

निम्नलिखित तालों के ठेके–आड़ (3/2), कुआड़ (5/4), तथा बिआड़ (7/4) की लयकारी में लिखने का अभ्यास – रूपक, झपताल, एकताल, आड़ाचारताल, सवारी (15 मात्रा) तीन ताल।

इकाई 4

गत एवं गत के विभिन्न प्रकारों की जानकारी। तबला स्वत्रंत वादन एवं साथ संगति के सिद्धांत।

इकाई 5

किसी तिहाई के बोलों को न बदलते हुए इसे अन्य तालों में सम से सम तक समायोजित करना व ताल लिपि में लिखना। निम्नलिखित की उदाहरण सहित परिभाषाएँ :– परन, कमाली परन, फरमाईशी परन, चक्करदार परन, तिहाई, नौहक्का।

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
विद् डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट अंतिम वर्ष
क्रियात्मक

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

1. त्रिताल, झपताल व रूपक के अतिरिक्त एकताल में सम्पूर्ण स्वत्रंत वादन।
2. त्रिताल में लखनऊ, बनारस, फर्रूक्खाबाद घरानों की विशेषताओं को प्रदर्शित करने की क्षमता।
3. एकताल, तिलवाड़ा, झूमरा एवं दीपचंदी तालों को संगति की दृष्टि से विलंबित लय में बजाने का अभ्यास।
4. आड़ा चौताल मे मुखड़े, टुकड़े एवं तिहाईयों को बजाना।
5. दी गई तिहाई को दम और लय मे परिवर्तन के द्वारा विभिन्न तालों मे समायोजित करना।
6. कहरवा, रूपक एवं दादरा मे लग्गियां एवं तिहाईयॉ को बजाने का अभ्यास।
7. त्रिताल, झपताल एवं रूपक को आड़ की लयकारी मे पढ़ना एवं बजाना ।

:संदर्भ सूची:

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
4. ताल परिचय भाग 1 एवं 2 – श्री गिरीष चन्द्र श्रीवास्तव